International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 11 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

मुगलकालीन संरक्षित राज्यों में मिथिला की राजनीतिक व सांस्कृतिक जीवन : एक अध्ययन

डॉ0 गरिमा
एम.ए., पीएच.डी. (इतिहास)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

क्षेत्र एवं काल मूलतः मुगलकालीन मिथिला रहा है। वर्णित तथ्य एवं खोज इसके प्रमाण है। प्रागैतिहासिक काल में अबतक अनेक परिवर्तन हुए है। जनक से लेकर आजतक कुछ काल का इतिहास भी उपलब्ध नहीं है, जिसे खोजना इतिहासकारों का फर्ज बनता है। मेरी अपनी धारणा यह है कि मिथिला में बज्जिसंघ के पतन के पश्चात् जिन राजकुलों का मिथिला पर आधिपत्य हुआ यथा–हायर्क, शिशुनाग, नंदवंश, मौर्यवंश, शुंवंश, कण्व राजकुल, सातवाहन आदि काल की इतिहास अति अल्प मात्रा में उपलब्ध है। शोध यदि इस काल से जुड़े राजकुलों या किसी विशेष राजकुल के बारे में किया जाए तो इतने अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे। व्यक्तिगत रूप से मेरी चाह शुंगकाल के इतिहास को समझने की है। विशेषकर पुष्यमित्र के काल का। यों मिथिला के किसी भी काल का इतिहास यथेष्ट अवसर प्रदान करता है। कोई भी काल अपनी कोख में इतिहास के अनेक परतों को सहेजे हुए है। जानने की भूख तो मेरी है, पर उम्र के 35 पड़ाव पर चाहूँगी कि युवा उत्साही, खोजी अपनी कुशाग्र बुद्धि और उपलब्ध आधुनिक तकनीकों के सहारे कुछ नवीन तथ्यों का उजागर करें।

श्री अखिलेश्वर प्रसाद सिंह, अवकाश प्राप्त उपाचार्य, राम निरीक्षण महाविद्यालय, समस्तीपुर के निजी आवास पर मैंने सम्पर्क किया। प्रस्तुत प्रयास के संबंध में पहले उनको परिचित कराया फिर उनसे इस दिशा में किए गये

प्रयास पर कुछ जानने की चेष्टा की। यो तो श्री सिंह इतिहास के शिक्षक थे। इतिहास में उनकी रूचि स्वाभाविक ही थी। पर उन्होंने जिस आयाम पर अपने विचार रखे है वह है ऐतिहासिक परिदृश्य सामाजिक, सांस्कृतिक स्खलित हुए मिथिला की। उन्होंने जनक याज्ञवल्क्य, गौतम, मंडन मिश्र की पवित्र भूमि में सामाजिक, चारित्रिक स्तर के गिरते प्रतिमान की ओर श्री सिंह की दृष्टि में इतिहास राजसत्ता के परिवर्तन का लेखा–जोखा नहीं होता। समसामयिक सामाजिक, ताने–बाने का चित्र भी इतिहास है। उनका सुझाव है कि हमें मिथिला के अतीत से कुछ सीखना चाहिए। अन्यथा हमारी सांस्कृतिक पहचान ही खो जाएगी। अंग्रेज इतिहासकारों ने हमारे समृद्ध सांस्कृतिक पहलुओं को अनदेखा कर हमारे इतिहास को विकृत रूप में प्रस्तुत किया है। अनपढ़, एवं अंधविश्वासी बताकर हमें अपमानित किया है। हम यह स्वीकार करते है कि भारतीय समाज में कालक्रम में कुछ कुरीतियाँ घर कर गई है पर हमारे उन्नत विचारों और आचरण पर पश्चिम के इतिहासकार मौण रहे हैं। मेरी दृष्टि पर इतिहास पर शोध ही नहीं बल्कि पुर्नलेखन की आवश्यकता है। प्रगतिशीलता के आवरण में सुसंस्कारों युक्त सामाजिक मूल्यों और प्रतिमानों को ढ़क देना ही कुछ इतिहासकारों का लक्ष्य रहा है। विशेषकर मिथिला के संदर्भ में हम भारतीय संस्कृति को उसके ऐतिहासिकता को उसकी उपयोगिता को तबतक नहीं समझ सकते हैं जबतक मिथिला की समृद्ध, बौद्धिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत को न समझे।

मिथिला के मुगलकालीन शोध विशेषकर विषय पर उनके द्वारा की गई अनुशंसा, सुझाव के आधार पर अपने हस्तलिखित आलेख में वांछित दिशा में सुधार भी किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि मिथिला के सारे वैशिष्टय को एक प्रयास में समाहित करना दुष्कर है। श्री सिंह ने बताया कि संस्कृति जीवन का संगीत है। उन्होंने महादेवी वर्मा को उद्धृत करते हुए कहा कि–''संस्कृति मानवचेतना का एक विकासक्रम है जो उसके अंतरंग तथा बहिरंग को पुरूस्कृत कर विशेष जीवन पद्धति को सृजित करती है। श्री सिंह को इस

बात को क्लेश है कि आज का अभिजात वर्ग भारतीय अतीत को आत्मसात नहीं कर सका। इतिहासकारों विशेष कर युवा इतिहासकारों एवं शोद्यार्थियों से इस दिशा में, इस प्रसंग में मिथिला के पौराणिक एवं आधुनिक इतिहास को देखना चाहिए।

इतिहास मूलतः पक्षों यथा आर्थिक, सामाजिक, नैतिक सांस्कृतिक आदि पक्षों का भी अध्ययन है। अन्यथा एकांगी हो इतिहास की विश्वसनीयता समाप्त हो जाएगी। डॉ0 मिश्र साहित्य के इतिहास विशेषकर संस्कृत साहित्य के इतिहास विशेषकर संस्कृत साहित्य के इतिहास को भी शोध का विषय मानते हैं। उनका तर्क है कि कोई भी समाज अपने भाषाई संस्कार से अलग नहीं रहता है। भाषा या साहित्य उनमें विचार आचरण का प्रभावित करना है। वैसे प्रभाव के क्रम में देखे–अनदेखे अप्रत्यक्ष रूप में इतिहास गढ़ा जाता रहता है और पीढ़ियों का इन शब्दों और साहित्यिक कृतियों में इतिहास की झलक मिलती है। अनुभूति हृदय का दास है तो बुद्धि बोध का दास है। यह युगपन है। दोनों मिलकर मानव चेतना में एक संस्कार जगत का निर्माण करते हैं। मनुष्य की स्मृति, अनुमान, कल्पना, भावना, समाजदर्शन, साहित्य आदि इसी से प्राप्त करते है। यही परिणति जीवन पद्धति का निर्माण करती है। क्या इसमें ऐतिहासिकता नहीं है? परिवेश यदि कठिनाइयों से भरी है तो जीवन पद्धति सहज ही उदार, स्नेहमयी होगी। इन सबों में कालप्रवाह के साथ जीवनधारा का इतिहास बनता और बिगड़ता है।

मिथिला का मानचित्र मुगलकालीन शासन के अंतर्गत मिथिला के राजाओं का काल तथा प्रशासकीय, राजनैतिक स्थिति एवं आर्थिक पक्षों की उपलब्ध जानकारी अध्येत्री ने देने का प्रयास किया है। मुगलकाल में मिथिला के राजाओं का पूर्ण स्वतंत्रता नहीं थी। यही परंपरा अंग्रेजों के समय में रहीं। मिथिला राजा यथार्थ में कर दाता राजा थे। अतः पराधीन सपनेहूँ सुःख नाही. .. की ग्रंथि के सभी राजा शिकार थे।

किसी भी क्षेत्र के जनजीवन को समझे बिना इतिहासलेखन या शोध संबंधी प्रयास अधूरा रहेगा। ब्राह्मण प्रभुत्व वाले मिथिला में अन्य जातियाँ बसती है। हाँ, ब्राह्मण बौद्धिक रूप से सामाजिक पायदान पर ऊँचे थे। पर अन्य जातियों को भी अपने रीति–रिवाज, परंपरा विश्वास और प्रचलन पर दृढ़ रहने की स्वतंत्रता थी। सामाजिक समरसता मिथिला में उच्चकोटि की रही। कतिपय अपवादों को छोड़कर जातीय सामाजिक सद्भाव थे और है। मिथिला के पर्व त्योहार, चित्रकला आदि भी महत्व के है। मिथिला पेन्टिग्स तो संसार में प्रसिद्ध है। लोकगीत इसके बड़े मधुर है। मिथिला के लोगों में सह–अस्तित्व का भाव, उसकी कला, प्रियता और संगीत के रस में रूचि आदि यथेष्ट रूप से विद्यमान है।

संदर्भ सूची :

1. आर.आर. चौधरी–ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर.
2. वही पृष्ठ.
3. मध्यकालीन मिथिला की वैवाहिक पद्धतियाँ–मिथिला संस्कृति एवं परंपरा, संपादक विश्वम्भर झा आदि सोसाइटी फॉर रिजनल स्टडीज, पटना–2001.
4. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, दो खंड, जे.के. मिश्रा.
5. हिस्ट्री ऑफ मिथिला, डयूरिंग मुगल पिरीयड 1915, पृष्ठ 407–431, जे0एस0बी0 चक्रवर्ती.
6. एसपेक्ट्स ऑफ सोसाइटी एंड इकोनॉमी, ऑफ मेडिवल इंडिया, जानकी प्रकाशन, 1889, पेज–80, डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर.
7. वही, पृष्ठ 41.
8. मिथिला का इतिहास–डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, पृष्ठ 538.
9. सम एपियाग्राफिकल रेकार्डस ऑफ द मेडिवल परियिड फरौम इस्ट इंडिया, पृष्ठ 43–44, डी.डी. सरकार.

10.ए सर्वे ऑफ मिथिला लिटरेचर–आर.के. चौधरी, पृष्ठ 26.
11.सुकुमार सेन इंडियन लियूस्टीकस.
12.शुभद्र झा, ए.वी.ओ.आर.आई. 11 पृष्ठ 106, 126,1940.
13.जर्नल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, वाल्यूम 13–3–4, पृष्ठ 298.